❀ श्री वीतरागाय नमः ❀

श्री कुम्मी-पुत्र-चरित्र ।

ट्रैक्ट नं० ८६

लेखक—

श्री भीखमचंद जी बांठिया

प्रकाशक—

मंत्री--श्री आत्मानंद जैन ट्रैक्ट सोसायटी,

अंबाला शहर ।

वीर संवत् २४५३ आत्म संवत् ३१	प्रति ७५० मूल्य -)॥	विक्रम ईस्वी १.

सत्यव्रत शर्मा, के प्रबन्ध से शान्ति प्रेस, मदनमोहनदर्वाजा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

श्री कुर्म्मा-पुत्र-चरित्र।

देवेन्द्र तथा असुरेन्द्र ने जिनके कमल रूपी चरणों की वन्दना की है, उन श्री वर्द्धमान स्वामी को नमस्कार कर संक्षेप में हम यह 'कुर्मा-पुत्र-चरित्र' लिखते हैं।

इस भारत वर्ष में राजगृह नामक एक उत्तम नगर आज भी विद्यमान है। यह विहार प्रदेश में एक ऐतिहासिक नगर है। पहिले विहार प्रदेश को मगध देश कहते थे। जिस समय की बात कही जाती है उस समय इस नगर के रहने वालों ने न्याय की सीमा का उल्लङ्घन कर दिया था, पाप की वृद्धि हो गई थी।

चैत्र का महीना है। वसन्तराज अपने सिंहासन पर अलौकिक शोभा धारण कर विराज रहे हैं। इनके शुभागमन से वृक्षों ने हरियाली धारण की है। कोकिलें कुहुकने लगी हैं यानी यह नगरी वसन्त को पति रूप में पाकर अतीव प्रसन्नता प्रकट कर रही है। किन्तु इस नगरी के रहने वाले नरक पथ के पथिक हो रहे हैं; ज्ञान को भूल रहे हैं और विषय की चिन्ता कर रहे हैं। इसी समय श्री वर्द्धमान स्वामी की कृपा हुई।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आपकी कृपा के बलसे मणि, सुवर्ण तथा चांदी का अति देदीप्यमान एक सिंहासन रचा गया। उस आसन पर समुद्र जैसे शान्त और गम्भीर तथा सुवर्ण जैसे शरीर वाले श्रीमन् महावीर स्वामी ने विराजमान होकर चार तरह के दानादिक धर्म्म का जो उपदेश दिया वह इस तरह है।

"धर्म्म के चार भेद हैं—दान, शील, तप और भाव। इनमें भाव धर्म्म का ही प्रभाव विशेष है। भाव भव-रूपी समुद्र को पार करने के लिए नौका रूप है, भाव ही स्वर्ग तथा मोक्ष रूपी नगर में जाने का सुगम पथ है और यही भाव भव्य प्राणियों के लिए अति दुर्लभ मणियों में श्रेष्ठ चिन्तामणि है। जिनका चरित्र हम लिखने बैठे हैं वे इसी भाव धर्म्म के द्वारा गृहस्थाश्रम में वास करते हुए भी केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष में गये थे।

महावीर स्वामी के इन्द्रभूति नाम के एक गणधर थे। वे उनके सर्व श्रेष्ठ शिष्य थे। उनका गोत्र गौतम था। वे चतुर थे। उनका शरीर बड़ा ही हृष्ट पुष्ट था। उनकी कान्ति से ब्रह्मचर्य्य खूब झलकता था। शरीर जैसा गौर वर्ण का था वैसा ही उनका तप भी उग्र और देदीप्यमान था। शरीर से स्नानादिक सुश्रूषा न करने के कारण ममता भी दूर होगई थी। उनकी सेवा में पांच सौ मुनि रहते थे। उन्होंने एक दिन श्री महावीर स्वामी की तीन प्रदक्षिणा की और वन्दना कर पूछा:—"हे भगवन् कुर्म्मा पुत्र कौन था? और गृहस्थाश्रम

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

में रह कर किस तरह उसने कैवल्य ज्ञान प्राप्त किया ? कृपा कर यह सब वृत्तान्त स्पष्ट रूप से मुझे कहिये।"

ऐसा प्रश्न सुनकर भगवान् श्री महावीर स्वामी ने चार कोस तक सुनाई देने वाली मधुर वाणी में इस तरह कहना आरम्भ किया—

"हे गौतम ! तुमने कुर्म्मा पुत्र का आश्चर्य कारक चरित्र पूछा है वह मैं कहता हूँ तुम ध्यान देकर श्रवण करो।

——:※:——

"प्रारम्भ"

इसी जम्बू द्वीप में भारत क्षेत्र के मध्य में प्रख्यात दुर्गमपुर नामक एक नगर था। उस समय इस नगर में द्रोण नाम का राजा राज्य करता था। यह बड़ा प्रतापी था। उसने अपने बाहु बल से बहुत सी लक्ष्मी एकत्र की, अपने राज्य का बहुत विस्तार किया था। इन्द्र की शची के समान उसकी द्रुमा नाम्नी एक पटरानी थी। इसके दुर्लभ नामक बहुत गुणवान, रूपवान, सौन्दर्य्यवान एक पुत्र था। यह युवावस्था आने पर भी गृह का कुछ काम धाम करता न था; केवल खेल कूद में अपना समय बिताता था। एक बार इसके दुर्गिल नामक उद्यान में सुलोचन नाम के एक केवल ज्ञानी गुरु पधारे। इस उद्यान में भद्र मुखी नाम्नी एक यक्षिणी रहा करती थी। इसी

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उद्यान में पाताल जाने का एक पथ था। इसी पथ से यह यक्षिणी नित्य अपने पाताल पुरी वाले दिव्य भवन में जाकर विश्राम करती थी। वह एक केवल ज्ञानी परम गुरु को आते देख बड़ी प्रसन्न हुई और इसने गुरू महाराज से अपने संशय को नाश करने के लिये प्रणाम कर एक प्रश्न पूछा:—

"हे पूज्य! मैं पूर्व जन्म में मानवती नाम्नी मानव स्त्री थी। उस समय मुझ को देवता भोगने के लिये लालायित रहते थे। आयु पूर्ण होने पर मैं इस जन्म में यक्षिणी हुई हूँ। मैं प्रार्थना करती हूँ कि आप कृपा कर यह बताइये कि उस जन्म के मेरे मनुष्य पति ने कहाँ जन्म लिया है?"

सुलोचन का ऐसा विनम्र प्रश्न श्रवण कर केवली गुरु महाराज ने कहना आरम्भ किया:—

"हे भद्रे! सुन! तुम्हारा वह दुष्प्राप्य पति इसी राजा का दुर्लभ नामक राजकुमार है।"

यह सुन, वह मानव स्त्री का रूप धारण कर राजकुमार के समीप गई। राजकुमार छोटे छोटे लड़कों में खेल रहे थे। उसने अपना माया जाल फैलाया और कुमार से कहा—"महाराज! यदि रसकेली करना हो तो आप मेरे साथ आइये। इन बालकों के साथ क्या खेलते हैं?"

महाराज कुमार की हालत सुनिये। उन्होंने जब इस स्त्री रूपी यक्षिणी को देखा, तब वे उस पर मोहित होगये

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

और उसके पीछे हो लिये । यह यक्षिणी उनको लेकर पाताल वाले अपने सुन्दर भवन में जा पहुँची । उस महल की अजीब व गरीब या विविध कारीगरी देखकर राजकुमार का मन मुग्ध हो गया । वे सोचने लगे कि मैं यह जो देखता हूँ वह क्या स्वप्न है या इन्द्रजाल है ? समझ में नहीं आता क्या बात है ? यह क्या इन्द्र की अमरावती पुरी है ? ऐसी इमारत तो कहीं देखी ही नहीं । अनेक प्रकार के तोरण पताकाओं से यह घर सुशोभित है । इसके रंग विरंगे मणियों के चमकते चित्रों पर सूर्य की किरण पड़ने से यह भवन अपूर्व शोभा धारण करता है । रत्नमय स्तम्भों पर पुतलियों के नृत्य करने से उसकी अलौकिक शोभा दिखाई देती है । यह मनुष्य भवन नहीं हो सकता । यह तो देव भवन है । दुर्लभ को आश्चर्य में गोते लगाते देखकर यक्षिणी ने कहा:—,

"हे स्वामी! मेरी बात सुनिये । हे सरल स्वभाव वाले नाथ! बहुत दिन ढूँढ़ने के बाद आज तुमको मैंने पाया है। सो हे नाथ! मैं आपको अपना मतलब गाँठने के लिये ही यहाँ लाई हूं । यह मेरा देव-भवन है और मैं यक्षिणी हूं। आज मेरे मन का मनोरथ रूपी कल्प वृक्ष फला है । बहुत दिनों के बाद आज मैं तुम्हारा दर्शन पा सकी हूं।"

यह सुन कर राजकुमार ने उस यक्षिणी की ओर गहरी दृष्टि डाली । उसके बड़े बड़े नेत्रों तथा सुन्दर एवं कमलवत्

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कपोलों पर दृष्टि पड़ते ही राजकुमार के मन का भाव बदल गया। उसके मुख पर प्रसन्नता की रेखाएं दौड़ गईं, वह सोचने लगा—इस स्त्री से तो मेरा पुराना परिचय जान पड़ता है। सोचते सोचते उसको भी पूर्व जन्म की बातें याद आ गईं। यक्षिणी ने भी खोल कर सब कह दिया। दोनों को अपने पूर्व जन्म के सुख-संभोग याद आए और दोनों ने एक दूसरे को गले लगाया। इसके बाद यक्षिणी ने राजकुमार की मानव-गन्ध दूर की और उसके शरीर पर सुगन्धित लेपन किया। फिर लज्जा त्याग कर स्वर्ग सुख भोगने लगे। दोनों तरह तरह के भोग उपभोग करने लगे। देव चार प्रकार के विषय-सुख भोग करते हैं। यह बात स्थानांग सूत्र में लिखी है। उनमें पहला और उत्तम सुख यह है कि देव देवियों के साथ काम-सुख भोगते हैं। यही मानव राजकुमार तथा यक्षिणी का भोग था।

इधर राजकुमार तो पूर्व परिचिता पत्नी के साथ सुख भोगने लगे। उधर उनके माता-पिता की क्यादशा हुई सो सुनिए।

इधर राजकुमार के माता-पिता उस दिन उनको न पाकर बहुत दुखी हुए। कितने ही नौकर चाकर उनकी तलाश में निकले; किन्तु कुछ फल नहीं हुआ, कहीं पता न लगा, पता लगे भी कैसे? देव की हरण की हुई वस्तु का पता मनुष्य कैसे लगा सकता है? दोनों बहुत दुखी रहने लगे। राजा का राज कार्य में भी मन नहीं लगता था। प्रजा भी राजकुमार के वियोग में दुखी रहने लगी।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एक दिन राजकुमार के पिता ने एक केवल ज्ञानी से पूछा:—"हे भगवन! कृपा कर यह बतलाइये कि मेरा पुत्र कहां है?"

इसके उत्तर में गुरु महाराज ने कहा—"तुम्हारे राजकुमार का एक यक्षिणी ने हरण किया है।"

यह बात सुन कर वे बड़े आश्चर्य में पड़े और फिर पूछा—"भगवन! देवता अपवित्र मनुष्य का हरण कैसे कर सकते हैं? कहा गया है कि मनुष्य की दुर्गन्ध चार सौ या पाँच सौ योजन तक जाती है। इसी से देव मनुष्य लोक में नहीं आते। फिर मेरे पुत्र का हरण कैसे हुआ?"

इस पर केवल ज्ञानी गुरु ने उस यक्षिणी का पूर्व वृत्तान्त कह सुनाया। राजा ने कहा:—"महाराज! कर्म का परिणाम अत्यन्त बलवान है। किन्तु हे भगवन! पूछना यह है कि मैं कभी कुमार को पुनः देख भी सकूंगा? क्या वह मेरे इन नेत्रों को कभी फिर शीतल करेंगे?"

केवली ने कहा—"यहीं वह तुमको मिलेगा।" यह सुनकर राजा ने अपने अन्य पुत्रों पर राज्य भार अर्पण कर वैराग्य ग्रहण किया। राजा-रानी दोनों ने आ कर केवली गुरु से दीक्षा ली।

इसी तरह दोनों प्राणी दुष्कर तप में निरत रह कर उन केवली गुरु के पास रहने लगे। एक बार वे केवली

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गुरु राजा-रानी को साथ लेकर दुर्गिल नामक उद्यान में पधारे। वहां वह यक्षिणी पुनः एक बार केवली मुनि महाराज के पास आई। उसने हाथ जोड़ कर बड़ी नम्रता के साथ पूछाः—"महाराज! आप कृपा कर यह बतलाइये कि आयु बढ़ाने का कोई उपाय है या नहीं?"

इसके उत्तर में केवली ने कहाः—"विद्या, पिता, औषध, मित्र, पुत्र, इष्ट कुल देवता स्नेह से सम्बन्ध रखने वाले माता, धन, स्वजन, परिवार शरीर का बल, देवेन्द्र तथा असुरेन्द्र कोई भी आयु बढ़ाने में समर्थ नहीं हो सकता?"

केवली की यह बात सुन कर यक्षिणी का चेहरा सूख गया। मानों उसका सर्वस्व हरण हो गया। दुखी मन उठ कर वह वहां से चली और थोड़ी ही देर में वह अपने घर जा कर लेट गई। चेहरे पर मानो पाला पड़ रहा था।

इस तरह अपनी प्रिय पत्नी को उदास देख कर राजकुमार ने पूछाः—"प्राणाधिके! आज तुम्हारा बदन-मंडल म्लान क्यों हो रहा है, क्या आज तेरी आज्ञा का किसी ने खण्डन किया है? या किसी ने तेरा अपमान किया है? मुझ से तो कोई अपराध नहीं हो गया है। बात क्या है? ज़रा कहो तो? तेरा सूखा हुआ चेहरा देख कर मेरा हृदय काँप रहा है।"

देवांगना ने कहाः—"हे प्रियतम! मैंने अवधि ज्ञान से मालूम किया है कि आप की आयु बहुत कम रह गई है।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सो मैंने इसके लिये बहुत यत्न किया है कि किसी तरह आपकी आयु बढ़ जाय। किन्तु हो नहीं सका।" फिर उसने केवली गुरु की बात कही और कहा कि आपके वियोग रूपी दुःख ने मेरे ऊपर आक्रमण किया है।

इस पर राजकुमार का मन चञ्चल हुआ। अन्त में धैर्य्य धारण कर राजकुमार ने कहाः—"प्रिये! तुम ज़रा सा भी सोच न करो। जो भविष्य होगा सो तो होवे हीगा। यह तो अमिट है किन्तु मुझे उन केवली महाराज के पास ले चलो। वहाँ हम दोना का उपकार होने की आशा है।"

यह सुन कर वह यक्षिणी राजकुमार को केवली महाराज के समीप ले आई। राजकुमार गुरु महाराज को पुनः पुनः प्रणाम कर एक जगह बैठ गये। इधर केवली के साथ रहने वाले राजा रानी ने राजकुमार को देखा और वे फूट फूट कर रोने लगे। मगर राजकुमार ने अपने माता पिता को पहचाना नहीं, क्योंकि वे लोग मुनि के वेश में थे। केवली महाराज ने कहाः—"हे राजकुमार! ये मुनि वेशधारी जो लोग हैं और जो अपने नेत्रों से आँसू बहा रहे हैं वे तुम्हारे माता पिता हैं। उनको तुम प्रणाम करो।"

इस पर केवली जी से राजकुमार ने पूछाः—"इन लोगों ने ऐसा व्रत क्यों ठाना है?" गुरु महाराज ने कहाः—"तुम्हारे वियोग में ही उन लोगों की यह हालत हुई।"

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

यह सुन कर जैसे मेघ को देख कर मोर नाचने लगता है चन्द्र को देख कर चकोर को जैसे आनंद होता है, सूर्य को देख कर जैसे कमल को और वसन्त ऋतु को देख कर कोकिला को जैसे आनन्द होता है उसी तरह राजकुमार को भी बड़ा आनन्द हुआ। वह शीघ्र ही अपने माता पिता के चरणों में गिर कर रोने लगा। यह देख कर यक्षिणी के नेत्रों में भी जल भर आया। उसने एक वस्त्र से राजकुमार के नेत्रों का जल मोचन किया।

अहो! महामोह का विलास कैसा है!

राजकुमार को अपने माता पिता के दर्शन पाकर बड़ा हर्ष हुआ। उसने यक्षिणी के साथ केवली महाराज के पास बैठ कर उनसे कहाः—"हे प्रभो! आप हम सभी के उपकार के लिये कुछ धर्मोपदेश करें।" यह सुन कर गुरु महाराज ने कहना आरम्भ कियाः—"हे भव्य जीवो! मनुष्य का शरीर पाकर जो धर्म करने में प्रमाद करता है वह हाथ में आये हुए चिन्तामणि रत्न को खो देता है। मैं इस पर एक दृष्टान्त देता हूँ तुम सभी लोग ध्यान देकर सुनो।"

किसी नगर में एक नामी कला कुशल वणिक था। उसको एक बार रत्न परीक्षा सीखने की धुन समाई। वह रत्नों की एक पुस्तक लेकर गुरु के पास गया और रत्नों की परीक्षा सीखने लगा। सब तरह के रत्नों के गुणों को पढ़ा। उसने सोचा कि अन्य रत्नों को छोड़ कर केवल एक चिन्तामणि

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

की चिन्ता करने से ही तो काम बन जायगा। अतः खानों को खुदवा खुदवा कर वह चिन्तामणि की खोज करने लगा। चिन्तामणि पाने के लिये उसने बड़े बड़े यत्न किये; किन्तु कुछ फल न निकला। वह विफल हो रहा था। उसकी विकलता देख कर किसी सज्जन ने कहाः—"भाई! तुम इसके लिये शोक क्यों कर रहे हो? तुम रत्न द्वीप में जाओ। वहाँ आशापूरी देवी का स्थान है उनकी आराधना करने से तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी।"

यह सुन कर वह रवाना हुआ और रत्नद्वीप पहुँचा। वहाँ पहुँच कर वह आशा पूरी की आराधना करने लगा। इक्कीस दिन उपवास व्रत करने के उपरान्त देवी प्रसन्न होकर प्रकट हुई। उस देवी ने कहाः—"हे सेवक! तुमने जिसके लिये मेरी आराधना की है। वह तुम्हारे भाग्य में नहीं है। लाचारी है।"

वणिक भी बड़ा चतुर था। उसने कहाः—"यदि मेरे भाग्य में होता तो तुम्हारी आराधना करने का मतलब ही क्या था? तुम्हारा नाम आशा पूरी है। इसी से प्रार्थना करता हूँ कि हे देवी! तुम मुझको चिन्तामणि रत्न देकर अपना नाम सार्थक करो।"

इस पर देवी ने उसको चिन्तामणि लाकर हाथ में दे दिया। वणिक यह रत्न पाकर अत्यन्त हर्षित हुआ और घर की ओर चला। राह में उसको समुद्र का भी मार्ग तय करना पड़ा। एक दिन वह समुद्र में जहाज़ से चला आ रहा था।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रात्रि का समय था। गगन मंडल में शशधर पूर्ण कला से दिग्मंडल को आलोकित कर रहे थे। चन्द्र की चांदनी मन को मुग्ध कर रही थी। उस वणिक के मन में आया कि देखें चन्द्र की ज्योति में चिन्तामणि कैसा दिखाई देता है यह देख ही रहा था कि अचानक उसके हाथ से वह चिन्तामणि समुद्र में गिर गया। वणिक तो हाथ पर हाथ धरे ही रह गया। अब क्या करता ? निदान वह घर आया।

जैसे समग्र रत्नों में शिरोमणि चिन्तामणि किसी तरह दुर्भागी मनुष्य को मिल जाय तो भी वह उसे रख नहीं सकता है वैसे ही बड़े प्रयत्न से प्राप्त किये मनुष्यत्व को भी प्रमाद क्षण काल में विनाश कर देता है। मनुष्य जन्म पाकर जिसने हृदय में जिन-धर्म का आश्रय लिया है वह धन्य है। वह पुण्यवन्त है। उसने मनुष्य जीवन को सार्थक किया है और वह जगत में श्लाघनीय तथा प्रशंसनीय है।

इस धर्मदेशना को सुन कर यक्षिणी ने समकित ग्रहण किया और कुमारने गुरु के पास से संसार से निवृत्ति का उपदेश ग्रहण किया। फिर दूसरे एक साधु से अपूर्व योग का अभ्यास करना सीखा। राजकुमार अपने माता पिता के साथ घोर तपस्या में निरत हुए। अन्त में तीनों ने धर्म का पूर्णतः पालन करते हुए इह जन्म का अवसान किया इसके बाद इन्होंने सातवें लोक में देव योनि में जन्म ग्रहण किया।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

इधर यक्षिणी मरणोपरान्त वैशाली नाम्नी नगरी के "भ्रमर" नामक राजा की सत्यवती कमला नाम्नी रानी हुई। इन्होंने जिन धर्म्म ग्रहण किया और अन्त में मरणोपरान्त उसी महाशुक नामक सातवें देव लोक में जन्म ग्रहण किया।

इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में राजगृह नामक एक श्रेष्ठ नगर है। जिस समय की बात कहते हैं उस समय वहाँ का महेन्द्र प्रतापसिंह राजा राज करता था। यह राजा राजनीति विशारद और बड़ा समृद्धिशाली हो गया था। यह शत्रु रूप हाथियों को मर्दन करने वाले सिंह के समान था। इसका नाम सुन कर बड़े बड़े योद्धा कांप उठते थे। इसकी प्रेयसी कुम्मादेवी नाम की रानी थी।

यह रूप सौन्दर्य्य में जगत् विख्यात थी। रूप लावण्य के सिवा यह विनय विवेक विचार और अन्य स्त्री गुणों से भी विभूषित थी। जैसे शचि इन्द्र के साथ और रति कामदेव के साथ सुख-आनन्द करती है, वैसे ही यह रूपवान और विनयशीला अपने पति के साथ सुख सम्भोग करती हुई दिन बिता रही थी। एक दिन रात को सुख से सो रही थी; ऐसे समय में उसने एक स्वप्न देखा। सवेरे उठ कर राजा से यह स्वप्न बड़े ही मधुर वचनों में कहा। राजा ने प्रसन्न मुख से कहा कि—"प्रिये! तुम्हारा मङ्गल हो। तुम शीघ्र ही गर्भ धारण कर एक पुत्र रत्न प्रसव करोगी।" यह पुत्र जगत् में विख्यात और गुणालंकृत होगा।"

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.
Jin Gun Aaradhak Trust

राजा की बात सुन कर रानी को बड़ा आनन्द हुआ। वह कौतूहलाक्रान्त हुई। थोड़े ही दिन में गर्भ के लक्षण दिखाई दिये।

रानी को इच्छा हुई कि हम सब शास्त्रों को सुनें। राजा ने बड़े बड़े षट् शास्त्रियों को बुलाया और शास्त्र ध्वनि से वह राज महल नित्य प्रति ध्वनित होने लगा। रानी ने जैन धर्म्म ग्रहण किया था। किन्तु इन शास्त्रियों ने उसके विरुद्ध बातें सुनाईं। इससे उलटा रानी के हृदय में दुःख पहुँचा। कहा है—"कई तरह के दान धर्म्म करो, किन्तु जिन्होंने दया धर्म का प्रतिपालन नहीं किया, उनका सब किया निष्फल है। इसके उपरांत राजा ने एक जैनी विद्वान् को बुलाया। उन्होंने जिन धर्म के तत्वों को कहा उनका सार इस प्रकार है।

जीव मात्र का पालन करना ही परम धर्म है क्योंकि अहिंसा व्रत ही सारे व्रतों में श्रेष्ठतम है। इस विषय पर दशवै कालिक सूत्र में कहा है,—"सर्व्व व्रतों में पहला काम श्रीमन्महावीर स्वामी ने बताया है कि सर्व जीवों के प्रति दया भाव रखना ही मनुष्य का संयम है।" और उपदेश माला में उन्होंने फिर कहा है कि—"जीवों के प्रति दया रहित प्राणी चारित्र्य हीन कहे जाते हैं। उनका गार्हस्थ्य जीवन व्यर्थ ही है यानी अहिंसा व्रत का पालन करना ही मनुष्य का श्रेयस्कर धर्म्म है।" यह सब उपदेश मेघ गर्जन शब्दों में सुन कर रानी का मन-मयूर

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बड़ा हर्षित हुआ। इधर रानी का गर्भ पूर्ण हुआ। उन्होंने यथा समय एक पुत्र रत्न प्रसव किया।

राजा के पहले पहल पुत्र हुआ। इससे प्रजा में कितना आनंद हुआ, उसका वर्णन कौन करे। कहीं बन्दीजन विरुदावली गा रहे हैं, कहीं नक्कारे बज रहे हैं—कहीं कुछ हो रहा है, कहीं कुछ। राजा ने बड़ी धूम के साथ उत्सव मनाया और पुत्र जन्म की प्रसन्नता में खूब धन लुटाया। कितने याचक अयाचक हो गये। ब्राह्मणों ने गायें और भूमि पाईं। इस पुत्र जन्म से सभी आनन्दित और पुलकित थे। इसके बाद एक योग्य ज्योतिषी के द्वारा राजकुमार का जन्म-लग्न कुँडली बनवाई गई और नाम-करण संस्कार हुआ। राजकुमार का नाम कुर्म्मा पुत्र रखा गया।

इसके बाद माता-पिता ने धर्म्म श्रवण कराने के खयाल से पुत्र का नाम धर्म्मदेव रक्खा। इस तरह पंडित का रखा नाम कुर्म्मा पुत्र तथा माता पिता का रखा नाम धर्म्मदेव हुआ। राजकुमार का बड़े लाड़ प्यार से पालन-पोषण होने लगा। यह द्वितीया के चन्द्र की कला के समान नित्य बढ़ने लगा। वह विद्याध्ययन के योग्य हुआ और इस काम में लगा दिया गया। थोड़े ही दिनों में पूर्व्व पुण्य के फल से वह चौंसठ कलाओं में निपुण हो गया।

इसके बाद उसने युवावस्था में पदार्पण किया। युवावस्था में स्वाभाविक रूप से विषय वासना की चेष्टा मनुष्य को

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

होती है। किन्तु इस विकार ने कुर्म्मा पुत्र को स्पर्श तक नहीं किया। साधारण मनुष्यों की बात कौन कहे—देखने में आता है कि देवता भी इस अवस्था में विषय सम्भोग से नहीं बचते। किन्तु धन्य है कुर्म्मा पुत्र को कि उसके हृदय में इस विकार ने स्थान तक न पाया। विकार का इतना साहस भी नहीं हुआ कि वह स्थान पाने की प्रार्थना कर सके। वह सदा विषय भोग से अलग रहा, क्योंकि उसको तत्व का पहले से ही ज्ञान था।

वह सर्वदा साधु मुनियों का साथ खोजता फिरता था। उसने एक दिन ज्ञानी से संसार का ज्ञान सुना। उसी दिन से उसको संसार की असारता बोध होने लगी। यम-नियम के साथ, संसार में जल, कमलवत रहने से उसे थोड़े ही दिनों में केवल ज्ञान प्राप्त हो गया।

कुर्म्मा पुत्र केवली ने यह विचारा—"आज यदि मैं घर द्वार छोड़ कर अलग अपने आचरण के अनुसार रहने लगूंगा तो मेरे माता पिता को बड़ा कष्ट होगा या मेरे वियोग में वे अपने प्राण त्याग देंगे" ऐसा विचार कर वह केवल ज्ञान सम्पन्न होते हुए भी माता पिता के ही साथ दिन बिताने लगा। धन्य है! उस कुर्म्मा पुत्र को कि केवल ज्ञानी होने पर भी माता पिता के लिये चिर-काल गृह वास में बिताया। वही पुत्र धन्य है जो माता पिता के चरण की वन्दना में ध्यान रखते हुए भी ज्ञानोपार्ज्जन किया करते हैं। इस तरह

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कुर्म्मापुत्र ने केवल ज्ञान सम्पन्न होने पर भी माता पिताके कारण ही अज्ञानी की तरह गृहवास में अपना समय बिताया।

गृहवास करते हुए कुर्म्मा पुत्र को जो केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ वह शुभ भाव का प्रभाव है।

भरत चक्रवर्ती राजा था और अपने अन्तःपुर में लीन रहता था। किन्तु शुभभाव के कारण ही उसने भुवन में ही केवल ज्ञान पाया था। ऐसे कितने ही उदाहरण देखे जाते हैं कि शुद्ध भाव के कारण ही केवल ज्ञानी अधिक तर होते आये हैं। पर्व्वत और सरसों में जितना अन्तर है वैसा ही द्रव्य क्रिया और भाव क्रिया में अन्तर है। उत्तम रूप से द्रव्य-स्तव की आराधना करने वाला जीव अच्युत देवलोक तक ही जा सकता है किन्तु शुद्ध भाव-स्तव की आराधना करने वाला जीव क्षण काल में मोक्ष पा सकता है।

इस मर्त्यलोक में पाँच विदेह क्षेत्र हैं। प्रत्येक विदेह क्षेत्र में बत्तीस-बत्तीस विजय हैं। अर्थात् पाँचों में कुल एक सौ साठ विजय हैं। इनमें पांच भरत और पांच ऐरावत क्षेत्र भी हैं। उन्हें भी जोड़ने से कुल एकसौ सत्तर क्षेत्र होते हैं। इन सभी क्षेत्रों में प्रत्येक में एक तीर्थंकर रहते हैं। एक सौ सत्तर तीर्थंकर समकालीन होते हैं। यह सब तो भौगोलिक कथा हुई। अब आगे की बात सुनिये।

एक महा विदेह क्षेत्र में मङ्गलावती नाम्नी विजया में धन धान्य से परिपूर्ण रत्नसंयमा नाम्नी एक नगरी है। जिस समय

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

की यह बात है उस समय वहां देवादित्य नामक राजा राज करता था। वह अत्यन्त प्रतापान्वित तथा साठहज़ार स्त्रियों का स्वामी था। एकसमय जगदुत्तम नामक तीर्थंकर विहार करते हुए उत्तम उत्तम वृक्षों से परिशोभित उस नगरी के परम रमणीय उद्यान में पधारे। उस समय, वहां उनके लिये रत्न-सोने और चांदी का सिंहासन रचा गया। उस पर आप विराजे। चक्रवर्ती राजा जिनेश्वर तीर्थंकर को आते देख कर अतीव आनंद हुआ। वे सकुटुम्ब आकर गुरू की प्रदक्षिणा और प्रणाम कर यथा स्थान बैठे। इधर प्रभु ने अमृत जैसी मीठी वोली में भव्य जीवों के उपकार के लिये इस तरह धर्म देशना देना आरंभ किया।

अहो भव्य जीवो! नरक भोगता हुआ जीव जब किसी तरह उससे निकलता है तब अनेकों योनियों में भ्रमण करता हुआ मनुष्य योनि को पाता है।

मनुष्य योनि तो मिल जाती है, किन्तु जब भाग्य बड़ा तेज़ होता है; जब पूर्व पुरय का विकास होता है तभी जीव इस आर्य्य क्षेत्र में मनुष्य रूप और उत्तम कुल में जन्म ग्रहण करता है, नहीं तो हर एक प्राणी के लिये इस आर्य्य क्षेत्र में तथा उत्तम कुल में जन्म मिलना कठिन है। यदि मिल भी गया तो पाँचों इन्द्रियों का संपूर्ण होना और नीरोग होना अति कठिन है क्योंकि मनुष्य नीरोगी बहुत ही कम दिखाई देते हैं। यदि इन्द्रियों की संपूर्णता तथा आरोग्यता प्राप्त भी हो गयी तो भी जिन धर्म्म सुनने की सामग्री मिलना दुर्लभ है;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्योंकि उत्तम गुण वाले साधु रूप गुरू कम दिखाई देते हैं। यदि ऐसे गुरू मिल भी जायँ, तो धर्म्म को सुनने की इच्छा होना कठिन है; इसी तरह यदि धर्म्म का सुनने वाला मिल भी गया, तो जिनेश्वर के कहे हुए वचनों में श्रद्धा उत्पन्न होना मुश्किल है। क्योंकि जितने मनुष्य दिखाई देते हैं वे विषय में अभी तक फँसे हैं। ऐसे मनुष्य जिनेश्वर के वचनों में कैसे श्रद्धा करेंगे? यदि ऐसा भी हो तो उनके कथनानुसार आचरण करने वाले बहुत ही कम होंगे; क्योंकि जब मनुष्य शुद्ध क्रिया में प्रवृत्त होता है तब उसकी जड़ में प्रमाद रूपी शत्रु कुठार लेकर आघात करने लगता है। कहा है कि:— "प्रमाद द्वेषी है। प्रमाद प्रबल शत्रु है, प्रमाद मुक्ति रूपी नगरी का चोर है और प्रमाद नरक का स्थान है।" जो पूर्वोक्त गुणों को प्राप्त कर प्रमाद रहित होकर शुद्ध आचरण का पालन करता है वह मनुष्य धन्य है, वह पुरुष नहीं, देवरूप है। ऐसे ही मनुष्य पुण्यवान गिने जाते हैं और वे परम पद को प्राप्त कर सकते हैं।

जिनेश्वर का ऐसा उत्तम उपदेश सुनकर कितने ही मनुष्यों ने शुद्ध भाव धारण किया। कितने ही पुण्यवन्तों ने शुभ आचरण ग्रहण किया और कितनों ही ने संसार से विरति लेली।

इस समय कमला, भ्रमर, द्रोण और दुमना जीवों का यहाँ समागम हुआ। इन्होंने पहले महाशुक्र नामक सातवें देव लोक में जन्म ग्रहण किया था। वहां से भारत के वैताढ्य

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पर्व्वत पर विद्याधर हुए थे। इन चारों ने संसार का भोग भोगने के लिये चारण मुनि से दीक्षा ग्रहण की थी। इसी तरह ये घूमते फिरते यहाँ आ पहुँचे और जिनेश्वर देव को नम्रतापूर्व्वक प्रणाम कर बैठ गये।

चक्रवर्ती राजा ने जिनेश्वर से पूछाः—"प्रभो! शुभ भाव वाले ये चारण मुनि कौन हैं? और कहाँ से यहां आये हैं?"

जिनेश्वर ने कहाः—"हे राजन्! ये चार मुनि वैताढ्य पर्व्वत से प्रणाम करने के लिये यहाँ आये हैं"

फिर राजा ने पूछा:—"हे भगवन्! जिस वैताढ्य पर्व्वत की बात आप कहते हैं उस वैताढ्य पर्व्वत वाले भरत क्षेत्र में कौन चक्रवर्ती केवली हैं?"

जिनेश्वर ने कहा:—"हे राजन्! हाल में इस भरत क्षेत्र में कोई चक्रवर्ती केवली नहीं। किन्तु गृहवासी कुर्म्मा पुत्र नामक केवल ज्ञानी हैं।"

इस पर फिर चक्रवर्ती ने पूछा कि "भगवन् केवल ज्ञानी गृहवास में कैसे रह गये।"

प्रभु ने कहा:—"कुर्म्मा पुत्र केवली अपने माता पिता के प्रतिबोध के लिये गृहवास में पड़े हैं। क्योंकि यदि वे गृह त्याग देते, तो उनके पिता माता उनके वियोग में अपने प्राण त्याग देते।"

इसके बाद चारों मुनियों ने पूछा—"हे भगवन! हम लोगों को केवल ज्ञान होगा या नहीं?"

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.

Jin Gun Aaradhak Trust

प्रभु ने कहाः—"तुम लोगों को थोड़े ही काल में केवल ज्ञान प्राप्त होगा।"

इस पर मुनियों ने पूछाः—"हे मोक्षपुरी के जाने वाले प्रभो ! तब केवल ज्ञान कैसे प्राप्त होगा?"

इस पर जगदुत्तम जिनेश्वर ने कहाः—"कुम्मा पुत्र केवली से जाकर महा शुक नामक देवलोक मन्दिर नामक विमान की तुम लोग जब सविस्तर कथा सुनोगे तब तुम लोगों को केवल ज्ञान प्राप्त होगा?।"

यह सुनकर वे चारों मुनि गुरु को भक्ति के साथ नम्रता पूर्वक प्रणाम कर आकाश मार्ग द्वारा उन कुम्मा पुत्र के घर पहुँचे। वहाँ कुम्मा पुत्र से जाकर महा शुक नामक देव लोक मन्दिर नामक विमान की कथा पूछी। कुम्मा पुत्र ने इस कथा को सविस्तर वर्णन किया। यह कथा सुनते ही चारों मुनियों को पूर्व जन्म की सब बातें याद आ गई और वे क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ हुए।

क्षपक श्रेणी का क्रम इस तरह है, प्रथम अनन्तानुबन्धी चार कषाय, मिथ्यात्व मोहिनी-मिश्र मोहनी, और समकित सात प्रकृतियाँ हैं। इसके बाद अनुक्रम से प्रत्याख्यान और अप्रत्याख्यान है। इस चौकड़ी के आठ कषाय नपुंसक वेद स्त्री वेद, हास्या दिषट्क पुरुष वेद और इसके संज्वलन क्रोधादिक हैं। आठ कषाय के मध्य में नरक गति नरकानुपूर्वी तिर्यंच गति तिर्यंचानुपूर्वी एकेन्द्रिय जाति द्वीन्द्रिय जाति

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तीनइन्द्रिय जाति चतुरिन्द्रिय जाति आतप उधोत स्थावर नाम कर्म्म सूक्ष्म साधारण अपर्य्याप्त निद्रा निद्रा, प्रचला प्रचला और सत्यानगर्द्धि इतनी प्रकृतियाँ हैं। इसके बाद आठ कषायों में जो शेष भाग रह जाता है वह व्यय होता है। इसके बाद विश्रान्ति पाने के लिये केवल ज्ञान प्राप्ति में जो समय बाक़ी बचता है उसके प्रथम समय में निद्रा प्रचला और नाम कर्म आदि पन्द्रह प्रकृतियां हैं—देव गति-देवानु-पूर्व्वी-वैक्रिय-शरीर नाम कर्म पहला संघयण, इसके सिवा या संघयण और अपना संस्थान इसके सिवा पाँच संस्थान तीर्थंकर नाम कर्म्म और आहारक शरीर नाम कर्म्म का व्यय होता है। इसके सिवा चौदह प्रकृतियाँ ज्ञानावरण की, पाँच प्रकृतियाँ दर्शनावरण की, चार प्रकृतियाँ तथा अन्तराय कर्म की चार प्रकृतियों के व्यय से केवल ज्ञान की प्राप्ति होती है।

ऐसे ही क्षपक श्रेणी प्राप्त कर चारों मुनि केवली हुए। इसके बाद वे जिनेश्वर के पास परिषद् में जा बैठे। इन्द्र ने जगदुत्तम जिनेश्वर से पूछा कि,—"हे स्वामिन! इन चारों मुनियों ने तुम्हें वन्दना क्यों नहीं की?" प्रभु ने कहा कि,—"इन चारों मुनियों ने कुर्म्मापुत्र से केवल ज्ञान की शिक्षा ली है इसीलिये इन्होंने मेरी वन्दना नहीं की।" इन्द्र ने फिर पूछा कि,—"कुर्म्मापुत्र क्या महाव्रती है?"

"आज के सातवें दिन तीसरे पहर वह चारित्र ग्रहण करेगा।" यह कहकर जगदुत्तम तीर्थंकर वहाँ से चले और

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सूर्य की तरह अंधकार का नाश करते हुए पृथ्वीतल में विचरण करने लगे।

इसके बाद महा सत्यवान कुर्म्मापुत्र ने गृहस्थ वेश त्याग कर विशेष प्रकार के दुःखों का नाश करने वाला मुनिवेश धारण किया। निर्म्मल चित्त वाले केवल ज्ञान सम्पन्न कुर्म्मापुत्र ने देव रचित निर्म्मल सुवर्ण के कमल पर आसीन होकर निम्नलिखित धर्म्मोपदेश किया।

हे भव्य प्राणियो! धर्म्म के दान, शील, तप, और भाव ये चार भेद हैं। इनमें अशुभ कर्म्म रूपी रोग का नाश करने वाला उत्तम औषधि स्वरूप भाव धर्म्म सर्व्व श्रेष्ठ है। जैसे सब दानों में अभय दान श्रेष्ठ है। सब ज्ञानों में केवल ज्ञान श्रेष्ठ है। सब ध्यानों में शुक्ल ध्यान श्रेष्ठ है; वैसे ही सब धर्म्मों में भाव धर्म्म ही सर्व-श्रेष्ठ है। क्योंकि गृहस्थाश्रम में रहते हुए भव्य प्राणी मनोहर भाव द्वारा केवल ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं। ऐसे लोगों में मैं एक उदाहरण स्वरूप हूँ। ऐसा उपदेश सुनकर अपने माता पिता से आज्ञा लेकर कितने ही भव्य प्राणियों ने चारित्र्य ग्रहण किया और सत्यता का सम्पूर्ण रूपेण प्रति-पालन कर सद्गति पाई। कितने ही भव्य प्राणियों को केवली का उपदेश सुनकर प्रतिबोध हुआ।

* इति *

——:❀:——

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust